शक्ति दल की विशेषतायें

(मधुबन-निवासियों के सम्मुख बापदादा के उच्चारे हुए महावाक्य)

मधुबन निवासी शक्ति सेना अपने को सदा शक्ति रूप में अनुभव करते हुये चलते हो? गायन ही है शक्ति दल। शक्ति दल के कारण ही बाप का नाम भी सर्वशक्तिमान् है। तो यह है सर्वशक्तिमान् का शक्ति दल। शक्ति दल की विशेषता है सदा और सर्व समस्याओं को ऐसे पार करे जैसे कोई सीधा रास्ता सहज ही पार कर लेते हैं। सोचेंगे नहीं, ठहरेंगे नहीं। इसी प्रकार शक्ति दल की विशेषता यही है जो समस्याएं उनके लिये चढ़ती कला का सहज साधन अनुभव होगा। समस्या साधन के रूप में परिवर्तन हो जाये, तो साधन अपनाने में मुश्किल नहीं लगता है क्योंकि मालूम होता है कि यह साधन ही सिद्धि का आधार है। शक्ति दल को सदैव हर समस्या जानी पहचानी हुई अनुभव होगी। वह कभी भी आश्चर्यवत् नहीं होंगे। आश्चर्यवत् के बजाय सदा सन्तुष्ट रहेंगे। कोई सहज साधन हो वा जो भी सम्बन्ध में बातें आती हैं वह अपने अनुकूल हो इस कारण सन्तुष्ट रहे तो इसको कोई सन्तुष्टता नहीं कहेंगे। जो अपने संबंध में वा अपनी स्थिति के प्रमाण अनुकूल न भी महसूस हो तो भी उसमें सन्तुष्ट रहें, ऐसी स्थिति होनी चाहिए। शक्ति दल के मुख से कभी 'कारण' शब्द नहीं निकलेगा। इस कारण से यह हुआ! 'कारण' शब्द निवारण में परिवर्तित हो जायेगा। यह तो अज्ञानी भी कहते हैं कि इस कारण से यह हुआ। आपकी यह स्टेज नहीं होनी चाहिए। सामने कोई कारण आये भी तो उसी घड़ी उसको निवारण के रूप में परिवर्तन करना है। फिर यह भाषा ख़त्म हो जायेगी, समय गंवाना खत्म हो जायेगा। 10-20 मिनट लगें वा 2 मिनट लगें, समय तो गया ना। उसी समय फौरन त्रिकालदर्शी बन कल्प-कल्प इस कारण का निवारण किया था, यह स्पष्ट स्मृति में आने से कारण को निवारण में बदली कर देंगे। सोचेंगे नहीं कि यह करना चाहिए वा नहीं? यह ठीक होगा वा नहीं? यह कैसे होगा? ऐसी भाषा खत्म हो जायेगी। जैसे मकान बनता है तो पहले छत डालने का आधार बनाते हैं। तो पहले वह समय था। अभी तो निराधार होना है। पहले यह बातें सुनने के लिये समय देते थे, पूछते थे कोई समस्या तो नहीं है, कोई सम्पर्क वाले विघ्न तो नहीं डालते? अब यह पूछने की आवश्यकता नहीं। अब अनुभवी हो चुके हो। तो ऐसी स्टेज तक पहुँचे हो वा अभी तक यह बातें करते हो कि यह हुआ, फिर यह हुआ? इन बातों को कहते हैं रामायण की कथाएं–यह हुआ, फलानी ने यह बोला। रामायण की कथाओं में टाइम तो नहीं गंवाते हो? अभी तक भी कथा वाचक हो? रामायण की कथा भी कोई एक हफ्ते में, कोई 10 दिन में पूरी करता है। ऐसी कथाएं तो नहीं करते हो? आपस में एक-दो से मिलते भी हो तो याद की यात्रा की युक्तियां वा दिन-प्रतिदिन की जो गुह्य-गुह्य बातें सुनते जाते हो उनकी लेन-देन करो। अब ऐसी स्टेज हो जानी चाहिए, जैसे भक्ति मार्ग को छोड़ दिया ना। अगर भक्ति मार्ग की कोई भी रीति रस्म अब तक भी हो तो आश्चर्य लगेगा ना। वैसे ही यह बातें करना वा इन बातों में समय गंवाना, इसको भी ऐसे समझना चाहिए जैसे यह भक्ति मार्ग की रीति रस्म है। जब ऐसा अनुभव होगा तब समझो परिवर्तन। जैसे अनुभव करते हो ना भक्ति मार्ग जैसे

पिछले जन्म की बात है। इस जन्म में कब घंटी बजायेंगे वा माला सुमिरण करेंगे? पास्ट लाइफ पर हंसी आयेगी। वैसे यह भी क्या है? अगर समझो, किसी के अवगुण वा ऐसी चलन का सुमिरण करते हो तो यह भी भक्ति हुई ना? जैसे बाप के गुणगान करना, सुमिरण करना वह माला हुई, अगर किसी के अवगुण वा ऐसी देखी हुई बातों का सुमिरण करते हो तो वह भी जैसे भक्ति मार्ग की माला फेरते हो। मन में संकल्प करना, यह भी जाप हुआ ना। जैसे वह अजपाजाप करते रहते हैं, वैसे संकल्प चलते रहते हैं, बन्द नहीं होते। तो यह भी जाप हुआ। एक-दो को सुनाते हो, यह घंटियां बजाते हो–फलाने ने यह किया, यह किया। तो यह है दुर्गति की रस्म।

मधुबन निवासी तो ज्ञान स्वरूप हैं ना। कोई भी दुर्गति की रीति रस्म चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म है, उनसे वैराग्य आना चाहिए। जैसे भक्ति के स्थूल साधनों से वैराग्य आ गया नॉलेज के आधार पर, वैसे इन भक्ति मार्ग के रस्म से भी ऐसे वैराग्य आना चाहिए। इस वैराग्य के बाद ही याद की स्पीड बढ़ सकेगी। नहीं तो कितना भी पुरुषार्थ करो। जैसे भक्त लोग कितना भी पुरुषार्थ करते हैं भगवान् की याद में बैठने का, बैठ सकते हैं? कितना भी अपने को मारते हैं, कष्ट करते हैं, भिन्न रीति से समय देते हैं, सम्पत्ति लगाते हैं, फिर भी हो सकता है? यहाँ भी अगर दुर्गति मार्ग की रीति रस्म है तो याद की यात्रा की स्पीड बढ़ नहीं सकती, अटूट याद हो नहीं सकती। घंटिया बजाना आदि छूट गया कि स्थूल रूप में छोड़ सूक्ष्म रूप ले लिया? भक्तों को तो खूब चैलेंज करते हो कि टाइम वेस्ट, मनी वेस्ट करते हो। अपने को चेक करो कहाँ तक ज्ञानी तू आत्मा बने हो? ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ ही है हर संस्कार, हर बोल ज्ञान सहित हो। कर्म भी ज्ञान स्वरूप हो, इसको ज्ञानी तू आत्मा कहा जाता है। आत्मा में जैसे-जैसे संस्कार हैं वह ऑटोमेटिकली वर्क करते है। ज्ञानी तू आत्मा के नेचुरल कर्म, बोल स्वरूप होंगे। तो अपने को देखो ज्ञानी तू आत्मा बने हैं? दुर्गति में जाने का जरा भी नाम-निशान नहीं होना चाहिए। जैसे आप लोग कहते हो जहाँ ज्ञान है वहाँ भक्ति नहीं, जहाँ भक्ति है वहाँ ज्ञान नहीं। रात और दिन की मिसाल देकर बताते हो ना? तो भक्तिपन के संस्कार स्थूल व सूक्ष्म रूप में भी न हों। ज्ञान के संस्कार भी बहुत समय से चाहिए ना। बहुत समय से अभी संस्कार नहीं भरेंगे तो बहुत समय राज्य भी नहीं करेंगे। अन्त समय भरने का पुरुषार्थ करेंगे तो राज्य-भाग्य भी अन्त में पायेंगे। अभी से करेंगे तो राज्य-भाग्य भी आदि से पायेंगे। हिसाब-किताब पूरा है–जितना और उतना। मधुबन निवासियों को तो लिफ्ट है और एकस्ट्रा गिफ्ट है क्योंकि सामने एग्ज़ाम्पल है, सभी सहज़ साधन हैं। सिर्फ कारण को निवारण में परिवर्तन कर दो तो मधुबन निवासियों को जो गिफ्ट है उनसे अपने को बहुत परिवर्तित कर सकते हो। सदैव आपके सामने निमित्त बनी हुई मूर्तियाँ एग्ज़ाम्पल हैं। शक्तियों का संकल्प भी पॉवरफुल होता है, कमज़ोर नहीं। जो चाहे सो करें, ऐसे को शक्ति सेना कहा जाता है। यहाँ तो बहुत सहज साधन है। काम किया और अपने पुरुषार्थ में लग गये। मधुबन निवासियों से ही मधुबन की शोभा है। फिर भी बहुत लक्की हो। अपने को जानो, न जानो, फिर भी लक्की हो। कई बातों से बचे हुए हो। स्थान के महत्व को, संग के महत्व को, वायुमण्डल के महत्व को भी जानो तो एक सेकण्ड में महान् बन जायेंगे। कोई बड़ी बात नहीं। माला फिक्स नहीं है। सभी को चाँस है। अब देखेंगे प्रैक्टिकल में क्या परिवर्तन दिखाते हैं? उम्मीदवार तो हो ना? अच्छा!

दूसरी मुरली: 4-12-72

महावीर आत्माओं की रूहानी ड्रिल

इस समय सभी कहां बैठे हो? साकारी दुनिया में बैठे हो वा आकारी दुनिया में बैठे हो? आकारी दुनिया में, इस साकार दुनिया की आकर्षण से परे अपने को अनुभव करते हो अथवा आकारी रूप में स्थित होते साकारी दुनिया की कोई भी आकर्षण अपनी तरफ आकर्षित तो नहीं करती है? साकारी दुनिया के भिन्न-भिन्न प्रकार के आकर्षण से एक सेकेण्ड में अपने को न्यारा और बाप का प्यारा बना सकते हो? कर्म करते हुए कर्मबन्धनों से परे, बंधनयुक्त से बंधनमुक्त स्थिति अनुभव करते हो? अभी-अभी आप रूहानी महावीर महावीरनियों को डायरेक्शन मिले कि शरीर से परे अशरीरी, आत्म-अभिमानी, बंधनमुक्त, योगयुक्त बन जाओ; तो एक सेकेण्ड में स्थित हो सकते हो? जैसे हठयोगी अपने श्वांस को जितना समय चाहें उतना समय रोक सकते हैं। आप सहज योगी, स्वत: योगी, सदा योगी, कर्म योगी, श्रेष्ठ योगी अपने संकल्पों को, श्वांस को प्राणेश्वर बाप के ज्ञान के आधार पर जो संकल्प, जैसा संकल्प जितना समय चाहो उतना समय उसी संकल्प में स्थित हो सकते हो? अभी-अभी शुद्ध संकल्प में रमण करना, अभी-अभी एक संकल्प में स्थित होना - यह प्रैक्टिस सहज कर सकते हो? जैसे स्थूल में चलते-चलते अपने को जहाँ चाहें रोक सकते हो। अचल, अडोल स्थिति का जो गायन है वह किन्हों का है? तुम महावीर-महावीरनियां श्रीमत पर चलने वाले श्रेष्ठ आत्मायें हो ना। श्रीमत के सिवाए और सभी मतें समाप्त हो गई ना। कोई और मत वार तो नहीं करती? मनमत भी वार न करे। शास्त्रवादियों की मतें, गुरूओं की मत, कलियुगी सम्बन्धियों की मत - यह तो समाप्त हो गई। लेकिन मनमत अर्थात् अपनी अल्पज्ञ आत्मा के संस्कारों के अनुसार संकल्प उत्पन्न होता है और उस संकल्प को वाणी वा कर्म तक भी लाते हैं; तो उसको क्या कहेंगे? इसको श्रीमत कहेंगे? वा व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति को श्रीमत कहेंगे? तो श्रीमत पर चलने वाले एक संकल्प भी मनमत वा आत्माओं के मत अर्थात् परमत पर नहीं कर सकते। स्थिति की स्पीड तेज न होने कारण कुछ न कुछ श्रीमत में मनमत वा परमत मिक्स होती है। जैसे स्थूल कार चलाते हो, पेट्रोल के अंदर अगर ज़रा भी कुछ किचड़ा मिक्स हो जाता, रिफाइन नहीं होता है तो स्पीड नहीं पकड़ेगी। ऐसे ही यहाँ भी स्पीड नहीं बढ़ती। चेक करो वा कराओ कि कहीं मिक्स तो नहीं है? यह मिक्स, फिक्स होने नहीं देती, डगमग होती रहती है। श्रेष्ठ आत्मायें, पदमापद्म भाग्यशाली आत्मायें एक कदम भी पद्मों की कमाई के बिना नहीं गंवाते हैं। रूहानी ड्रिल आती है ना। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी। देरी नहीं लगनी चाहिए। जैसे साकार रूप अपना है वैसे ही निराकारी, आकारी रूप भी अपना ही है ना। अपनी चीज को अपनाना, उसमें देरी क्या? पराई चीज को अपनाने में कुछ समय लगेगा, सोच चलेगा लेकिन यह तो अपना ही असली स्वरूप है। जैसे स्थूल चोले को कर्तव्य के प्रमाण धारण करते हो और उतार देते हो, वैसे ही इस साकार देह रूपी चोले को कर्तव्य के प्रमाण धारण किया और न्यारा हुआ। लेकिन जैसे स्थूल वस्त्र भी अगर टाइट होते हैं तो सहज उतरते नहीं हैं, ऐसे ही अगर आत्मा का यह देह रूपी वस्त्र देह के, दुनिया की, माया की आकर्षण में टाइट अर्थात् खिंचा हुआ है तो सहज उतरेगा नहीं अर्थात् सहज न्यारा नहीं बन सकेंगे। समय लग जाता है।

थकावट होती है। कोई भी कार्य जब सम्भव नहीं होता है तो थकावट वा परेशानी हो ही जाती है। परेशानी कभी एक ठिकाने टिकने नहीं देती। तो यह भक्ति का भटकना क्यों शुरू हुआ? जब आत्मा इस शरीर रूपी चोले को धारण करने और न्यारे होने में असमर्थ हो गई। यह देह का भान अपने तरफ खैंच गया तब परेशान होकर भटकना शुरू किया। लेकिन अब आप सभी श्रेष्ठ आत्मायें इस शरीर की आकर्षण से परे एक सेकेण्ड में हो सकते हो, ऐसी प्रैक्टिस है? प्रैक्टिस की परीक्षा का समय कौन-सा होता है? जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। कहते हैं ना - बहुत दर्द है, इसलिए थोड़ा भूल गई। लेकिन यह तो टग ऑफ वार (रसा-कसी) का समय है, ऐसे समय पर कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय पर विजयी बन दिखाते हैं क्योंकि अष्ट रत्नों में सदैव अष्ट शक्तियाँ कायम रहती हैं, ऐसे अष्ट ही भक्तों को अल्पकाल की शक्तियों का वरदान देने वाले इष्ट बनते हैं।

ऐसे अष्ट भुजाधारी अर्थात् अष्ट शक्ति सम्पन्न, शक्ति रूप महावीर-महावीरनियाँ, एक सेकेण्ड में संकल्प को कन्ट्रोल करने में सर्वश्रेष्ठ आत्मायें, सर्व आत्माओं को बाप का परिचय दिलाने वाली आत्मायें, बिछुड़ी हुई आत्माओं को बाप से मिलाने वाली आत्मायें, प्यासी आत्माओं को सदाकाल के लिए तृप्त करने वाली आत्मायें, बन्धनमुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त, जीवनमुक्त आत्माओं को याद-प्यार और नमस्ते।

मेला अर्थात् मिलन। यहाँ अन्तिम मेला कौन-सा होगा? संगम की बात सुनाओ। कर्मातीत अवस्था भी तब होगी जब पहले मेला होगा। बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज - सभी में समानता का मेला लगेगा। जब आत्मायें बाप की समानता के मेले को मनायेंगी तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आयेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लायेगी। मेला लगने के बाद क्या होता है? अति शान्ति। तो आत्मायें भी मेला मनायेंगी, फिर वानप्रस्थ में चली जायेंगी। वानप्रस्थ कहो अथवा कर्मातीत कहो, लेकिन पहले यह मेला होगा। अच्छा!

वरदान:- मनमत, परमत को समाप्त कर श्रीमत पर पदमों की कमाई जमा करने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव

श्रीमत पर चलने वाले एक संकल्प भी मनमत वा परमत पर नहीं कर सकते। स्थिति की स्पीड यदि तेज नहीं होती है तो जरूर कुछ न कुछ श्रीमत में मनमत वा परमत मिक्स है। मनमत अर्थात् अल्पज्ञ आत्मा के संस्कार अनुसार जो संकल्प उत्पन्न होता है वह स्थिति को डगमग करता है इसलिए चेक करो और कराओ, एक कदम भी श्रीमत के बिना न हो तब पदमों की कमाई जमा कर पदमापदम भाग्यशाली बन सकेंगे।

स्लोगन:-

मन में सर्व के कल्याण की भावना बनी रहे–यही विश्व कल्याणकारी आत्मा का कर्तव्य है।